अध्याय

द्वितीय

अध्याय द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1.0 प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित का पुनरावलोकन अत्यंत महत्वपूर्ण कदम हैं | शोध कार्य के अंतर्गत प्रक्रिया है | वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है | संबंधित साहित्य से तात्पर्य है अनुसंधान की समस्या से संबंधित सभी प्रकार के साहित्य पुस्तकों, ज्ञानकोश , पत्र – पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधो एवम् अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्त्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पना का निर्माण,अध्ययन की रुपरेखा आदि तैयार करने में सहायता मिलती है |

जब तक अनुसंधानकर्त्ता को ज्ञान ना हो जाए किस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है , तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उस दिशा में सफल हो सकता है |

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह अनुसंधान की नैतिकता का आधार होता है। बहुधा नव अनुसंधानकर्ता इसके महत्व को पहचान नहीं पाते हैं | उन्हें लगता है कि जो समस्या उन्होंने चुनी है उस पर अविलम्ब अनुसंधान क्रिया प्रारंभ हो जानी चाहिए। अनुसंधान क्रिया का प्रारंभ व उपकरण के निर्माण और प्रदत्त सामग्री के संकलन से समझते हैं। साधारणतया अपनी समस्या से संबंधित कुछ अनुसंधान लेखों और पुस्तकों का अध्ययन कर पुनरावलोकन की इतिश्री कर लेते हैं।

वस्तुतः साहित्य पुनरावलोकन एक कठोर परिश्रम का कार्य है| प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में ही अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में - साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कार्य है। मानविकी विषयों में तो साहित्य के पुनरावलोकन के बिना अनुसंधान कार्य हो ही नहीं सकता। शिक्षा में दोनों प्रकार के अनुसंधान क्षेत्रीय अध्ययन और पुस्तकालयों और लेखों पर आधारित अध्ययनों में साहित्य का पुनरावलोकन एक अभिन्न अंग है। ऐतिहासिक अन्वेषण में तो समस्या पर उपलब्ध संपूर्ण लिखी हुई सामग्री चाहे लेखों, पत्रों, अथवा पुस्तकों के रूप में ही मीमांसा ही अनुसंधान का मुख्य कार्य है। क्षेत्रीय अध्ययनों में जहाँ उपलब्ध उपकरणों अथवा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा दत्त संकलन का आकार होता है,

समस्या से संबंधित संपूर्ण साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

2.1.1 संदर्भ साहित्य का अर्थ

संदर्भ साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जिसका प्रयोग शोधकर्ता अपने शोध हेतु मार्गदर्शन, दिशा निर्देशन व सहायता प्राप्त करने के लिए करता है। संदर्भ सहित में वे सभी पत्र पत्रिकाएं, पुस्तकें, पूर्व में किए गए शोध सम्मिलित किए जाते हैं जिन्हें आधार रूप में स्वीकार कर, नवीन परिस्थितियों में नव शोध के प्रयास किए जाते हैं। संदर्भ साहित्य में उन सभी शोध कार्यों का विवरण दिया जाता है जो शोधकर्ता के शोध कार्य से संबंधित है।

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्मी द्वारा शोध की उपयोगिता हेतु संदर्भ का अध्ययन किया गया है तथा शोध संबंधी समस्याओं, परिकल्पनाओं का निर्माण व अध्ययन की रूपरेखा का शोधकार्य के संपादन में सहायता हेतु आवश्यक समझकर संदर्भ साहित्य का सिंहावलोकन करते हुए वैज्ञानिक शोध की प्रक्रिया द्वारा शोध संबंधी तथ्यों का प्रतिपादन किया है।

2.1.2 संदर्भ साहित्य की परिभाषाएं

संदर्भ साहित्य के अर्थ को विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के आधार पर और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। यह परिभाषाएं निम्नलिखित हैं –

वाल्टर बोर्न – "शैक्षिक अनुसंधान से संबंधित साहित्य का अध्ययन किसी शोधकर्ता के लिए किसी समस्या विशेष के मूल में पहुंचने का महत्वपूर्ण साधन है"|

डॉ मिश्रा - "शिक्षा के उद्देश्य, प्रक्रिया और मूल्यांकन मुख्यतः शिक्षण से संबंधित है, अतः यह महत्वपूर्ण है कि बिना मूल्यांकन की पृष्ठभूमि में शिक्षण सर्वथा अनुपयुक्त है। मूल्यांकन की समस्याओं से संबंध साहित्य का अध्ययन भी उनके अनुसार उतना ही महत्वपूर्ण है जितना शिक्षा से संबंधित साहित्य के अध्ययन का अध्ययन"।

वार्टर वी. गुड – "मुद्रित साहित्य का अपार भंडार समस्या के परिभाषीकरण, विश्लेषणार्थ, परिकल्पना के निर्माण, अध्ययन की उपयुक्त विधि के चुनाव तथा सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करता है। वास्तव में रचनात्मकता, मौलिकता तथा चिंतन के विकास हेतु विस्तृत व गंभीर अध्ययन आवश्यक है"।

जान डब्ल्यू बेस्ट – "व्यावहारिक रूप में संपूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों व पुस्तकालयों में मिल सकता है। अन्य प्राणियों से भिन्न मानव को अतीत से प्राप्त ज्ञान जो प्रत्येक पीढ़ी के साथ नए ज्ञान के रूप में प्रारंभ करना चाहिए। ज्ञान के विस्तृत भंडार में उसका नियंत्रण योगदान प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किए गए प्रयासों की सफलता को संभव बनाता है"।

गुडवार स्केट्स – "योग्य चिकित्सक के लिए आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित रहे, इसी प्रकार शिक्षा जिज्ञासाओं को अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वालों का अनुसंधान के लिए उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं और खोजों से परिचित होना आवश्यक है"।

2.1.3 संदर्भ साहित्य की आवश्यकता एवं उपादेयता

किसी भी शोध कार्य में संदर्भ साहित्य का विशेष स्थान होता है। संदर्भ साहित्य का अध्ययन कर शोधकर्त्ता अपने शोध के उचित दिशा निर्धारण हेतु सहायता प्राप्त कर संदर्भ साहित्य ग्रंथों के माध्यम से तत्संबंधी विशुद्ध ज्ञान शोध की पृष्ठभूमि के रूप में प्राप्त करता है संदर्भ सहित शोध कार्य की स्पष्टता के साथ - साथ मार्गदर्शन का कार्य भी करता है। वह समस्या के समाधान हेतु शोधार्थी द्वारा किए गए अथक प्रयासों को सफल बनाता है। संदर्भ साहित की आवश्यकता एवं उपादेयता को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जाता है।

शोध कार्य की योजना बनाने में प्रारंभिक पदों में से एक रुचि के अनुरूप विशेष क्षेत्र में किए गए शोध कार्यों का पुनः निरीक्षण करता है, इस शोध का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण शोधकर्ता को एक दिशा का संकेत देता है।

प्रत्येक अनुसंधानकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह दूसरों के द्वारा किए गए अपनी समस्या से संबंधित साहित्य की सूचनाओं से भलीभांति अवगत हो। वास्तविक योजना बनाने और अध्ययन करने में यह अत्यंत महत्वपूर्ण पूर्वाकांक्षा समझा जाता है।

यह अध्ययन की समस्या को साधन प्रदान करता है। शोध की समस्या का चयन करने और पहचानने के लिए सहायता प्रदान करता है। शोधकर्ता साहित्य के पुनः निरीक्षण के आधार पर अपनी परिकल्पनाएँ बनाता है। यह अध्ययन के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। अध्ययन के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद - विवाद किया जा सकता हैं|

पूर्व शोध में दिए गए सुझावों कई नए विचारों का प्रादुर्भाव होता है जिसमें शोधकर्ता को अपने शोध में सहायता मिलती है।

संबंधित साहित्य के अध्ययन से विभिन्न प्रकार की नई समस्याओं से सामना होता है तथा शोध के क्षेत्र में इसका समाधान प्रस्तुत करना भी शोध का एक उद्देश्य बन जाता है।

शोध कार्य क्षेत्र में यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि संबंधित साहित्य के अध्ययन के अभाव में किसी भी अनुसंधान का पूर्ण किया जाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। संदर्भ साहित्य का अध्ययन शोध के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में महत्वपूर्ण कारक है किसी भी शोधकर्ता के लिए शोध के प्रमाणित तथा सार्थक निष्कर्षों की प्राप्ति हेतु संदर्भ साहित्य का अध्ययन करना अपरिहार्य है।

2.1.4 संदर्भ साहित्य का महत्व

संबंधित साहित्य का अध्ययन जैसा कि जान डब्ल्यू बेस्ट 1962 ने संकेत दिया है, शोध कार्य के लिए समय लेने वाला परंतु उपयोगी कार्य है शोध विद्यार्थी को किसी विशिष्ट उपक्षेत्र में जिसमें वह शोध हेतु समस्या चयन करता है, सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक दृष्टि से क्या हो चुका है, अन्य शोधार्थीयों में क्याक्या प्रश्न किए हैं-, किन तरीकों एवं विधियों आगे बढ़ी या उन्होंने शोध कार्य को किस प्रकार आगे बढ़ाया हैं तथा किन समस्याओं पर शोध कार्य नहीं हुआ हैं, आदि सबकी जानकारी शोधार्थी को होनी आवश्यक है।

सी.सी. गुड ने शोध कार्य में संबंधित साहित्य के महत्व पर अपने विचार इस प्रकार किए है| "प्रत्येक शिक्षाविद, शोधकर्ता, अध्यापक, प्रशासन व छात्रों में शिक्षा के क्षेत्र में अधिकतम व नवीनतम सूचनाओं का ज्ञान होना आवश्यक है"|

मोले 1964- "उपलक्ष साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन शोधकार्य को उपयुक्त रूप से निश्चित करने, समस्या पर सूझबूझ से काम करने तथा समस्या के क्षेत्र का सांगोपांग ज्ञात कराने में मदद करना है"। इससे समस्या पर तथा विभिन्न उलझन पूर्ण पहलुओं पर अधिक जानकारी मिलती है तथा वे आवश्यक रूप से होने वाले दोहरे श्रम से बचाने का कार्य करता है|

प्रशासित साहित्य प्राकल्पना की रचना करने के लिए आम स्रोत है। शोध प्रक्रिया से संबंधित साहित्य के अध्ययन अत्यावश्यक है। संबंधित साहित्य के अध्ययन में शोध में निम्नलिखित प्रकार से सहायता मिलती है|

संदर्भ साहित्य के अवलोकन द्वारा अनुसंधान के जिन विषयों पर पहले शोध हो चुका है| उसकी पुनरावृत्ति होने से बच जाती है।

- पूर्व साहित्य में दिए गए सुझावों से कई नए विचारों का प्रादुर्भाव होता है जिससे अनुसंधानकर्ता को अपने शोध में सहायता मिलती है। शोध से संबंधित वर्तमान ज्ञान का पता लगाना शोध में आगे बढ़ने का प्रथम सोपान है। संदर्भ साहित्य के अध्ययन से नई समस्याओं पर भी ध्यान जाता है।
- समस्या के अनुकूल शोध प्रणाली विकसित करना| समस्या से संबंधित संपूर्ण साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। सच्चिदानंद एवं अरविंद फाटक की दृष्टि में साहित्य के अवलोकन के विभिन्न लाभ हैं –
- संदर्भ साहित्य शोध कार्य के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है तथा प्रत्येक प्रत्यय एवं धारणा को स्पष्ट करता है|
- संदर्भ साहित्य के द्वारा समस्या के क्षेत्र में स्थिति स्पष्ट हो जाती है।
- संदर्भ साहित्य का ज्ञान आगे की अध्ययन योजना बनाने में सहायता प्रदान करता है।
- संदर्भ साहित्य के अवलोकन में शोध की अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचा जा सकता है।
- संदर्भ साहित्य के द्वारा समस्या हेतु अनुसंधान की समुचित विधि के सुझाव प्राप्त होते हैं।

2.1.5 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का महत्व निम्न बिंदुओ के द्वारा स्पष्ट है

1. वह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है |
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि अनुसंधानकर्त्ता को यह ज्ञान हो की ज्ञान कि वर्तमान सीमा कहा जाती है | वर्तमान ज्ञान कि जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है |
3. समस्या से संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है|

4. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता है |
5. किसी अनुसंधानकर्त्ता को पूर्व में वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया जा चुका हो तो हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा अतः संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन हमारे अनुसंधानकर्त्ता के प्रयास को सार्थकता प्रदान करता है |
6. इससे अनुसंधानकर्त्ता को आगे अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अनादृष्टि प्राप्त होती है |

2.1.6 समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

समस्या से संबंधित साहित्य का पुरावलोकन शोध के विषय हेतु शोधार्थी द्वारा इस समस्या पर किए गए शोधों का अध्ययन कर निम्न जानकारी प्राप्त की गई है

पी. रेन कूला (2012)- दृष्टि बाधित बच्चों के समावेशी शिक्षा पर अभिवृत्ति प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य दृष्टिकोण बच्चों के समावेशी शिक्षा पर अभिवृत्ति स्केल निर्माण करना, स्केल आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले के 370 अध्यापकों द्वारा विकसित व मानकीकृत किया गया अभिवृत्ति स्केल से निष्कर्ष पड़ आइटम चयनित किया गया, जिन्हें 5 भागों में बांटा गया, यह समावेशी शिक्षा का संप्रत्यय, सामान्य अध्यापक, सामान्य बच्चे, विशिष्ट बच्चों तथा अभिभावक |

ज्योतिमयी नायक (2008)- समावेशी शिक्षा के प्रति अध्यापक एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया, प्रयुक्त अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे - विकलांग बच्चों के अभिभावकों का सम्मिलित शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण अध्ययन करना । सामान्य बच्चों के अभिभावकों का सम्मिलित शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना | सामान्य विद्यालयों के अध्ययनरत शिक्षकों एवं सामान्य बच्चों के अभिभावकों का सम्मिलित शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना |

पी.सी. विश्वास एवं ए. पांडा (2004)- समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं अवरोध का अध्ययन किया । प्रस्तुत शोध का उद्देश्य विकलांग बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान करने के प्रति अभिवृत्ति अवरोध की खोज और उसकी प्रकृति का अध्ययन करना है ।

गुप्ता 1996 ने अध्यापकों के लिए समावेशी ने "अध्यापकों के लिए समावेशी शिक्षा दर्शिका विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सहायता हेतु"|

चोपड़ा 2003 के द्वारा "समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक" विषय पर अध्ययन किया गया उनके निष्कर्ष के अनुसार समावेशी और बहिष्कार के बीच की खाई को दूर करने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों, समाज और प्रशासकों और सरकार सामूहिक रूप से समावेशी शिक्षा की नीतियों को लागू करने के लिए काम करना चाहिए।

संथी एस.पी. 2004 के द्वारा विद्यालय मैं श्रवण बाधित बच्चों का समावेश शिक्षक की अभिवृत्ति पर एक सर्वेक्षण किया गया।

एरेना मोजर एवं टीम ने आस्ट्रेलिया 10 वर्ष के शोध के बाद पाया की विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ रहकर सहयोगी अधिगम कराने से समावेशी शिक्षा के लिए बेहतर सहयोग का कार्य करती है |

रवि शंकर (2010) ने समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति को जानने का प्रयास किया है | जिसमे प्रशिक्षण की अहम भूमिका रही है | इस लघुशोध प्रबंध में उसमें महिला शिक्षकों तथा पुरुष शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति समान सोच – विचार पाया | हालांकि समावेशी शिक्षा प्रणाली के लिए बनने वाली कानूनी प्रक्रिया या नीतियों में लिंग के आधार पर अंतर पाया है | इस शोध प्रबंध ने नीति निर्माताओं के मनोवैज्ञानिक अंतःदशा को समझने का प्रयास किया किया गया हैं |

छैल बिहारी (2013) ने प्रारंभिक स्तर पर समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों के विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन करते हुये समावेशी शिक्षा में प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक शोध किया है इन्होने अपने शोध कार्य में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया हैं | जिसमें कुल 40 शिक्षकों पर शोध किया गया इनमें से 20 समावेशी शिक्षा में प्रशिक्षित अध्यापकों की तुलना में समावेशी शिक्षा में अप्रशिक्षित अध्यापकों को दृष्टिकोण में समावेशी माहौल के प्रति नकारात्मक पक्ष पाया |

गुर्जर , मोनू सिंह (2014) उच्चप्राथमिक स्तर पर सामान्य विद्यालयो के प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों का स्वनिर्मित अभिवृत्तिमापनी द्वारा समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया | इस लघु शोध में कुल 30 विद्यालयों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया,जिसमे 15 ग्रामीण एवं 15 शहरी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों तथा 60 शहरी एवं 60 ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित करते हुए उनके सकारात्मक

व नकारात्मक दृष्टिकोणों को प्रतिशत मान के आधार पर परखा गया | उपर्युक्त लघु शोध द्वारा प्रधानाध्यापकों का विश्लेषणात्मक निष्कर्ष सामने आया कि समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण प्रधानाध्यापकों का अभिमत शहरी विद्यालय के प्रधानाध्यापकों की तुलना में अधिक सकारात्मक रहा | ग्रामीण क्षेत्र में निजीविद्यालयों में कार्यरत महिला प्रधानाध्यापकों की अपेक्षा पुरुष प्रधानाध्यापकों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक पाया गया | इसी आधार पर अध्यापकों को समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को भी स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी द्वारा जांचा गया जिसमें शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की बजाय ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों का दृष्टिकोण कही अधिक सकारात्मक पाया गया विशेष कर निजी विद्यालयों के अध्यापकों का |

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा (2005) में भी समावेशी शिक्षा पर बल देते हुये बताया गया है कि स्कूलों को ऐसे केन्द्र बनाये जाने की जरुरत है जहाँ मानसिक अथवा शारीरिक रूप से असमर्थ बच्चों को समाज के हाशिए पर जीने वाले बच्चों और कठिन परिस्थिति में जीने वाले बच्चों को शिक्षा के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के सबसे ज्यादा फायदे मिले | अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के मौके और सहपाठियों के साथ घटने के मौके देना बच्चों में प्रोत्साहन और जुड़ाव को पोषण देने के शक्तिशाली तरीके है |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP2020) का उद्देश्य भारत के युवाओं को समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना हैं यह भारत की 21 वीं सदी की पहली शिक्षा नीति जो की योजनाबद्ध और चरणबद्ध तरीके से पूरे देश में लागू की जा रही हैं | भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy) 21 वीं सदीं की पहली शिक्षा नीति हैं |

2.1.7 शोध प्रश्न

1. क्या विद्यालयी कार्यकर्ता समतामूलक शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?

अ. क्या विद्यालयी शिक्षक समतामूलक शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?
ब. क्या विद्यालयी प्रधानाध्यापक समतामूलक शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?
स. क्या विद्यालयी शिक्षिका समतामूलक शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?
द. क्या प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक / शिक्षिका समतामूलक शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?
घ. क्या अप्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक / शिक्षिका समतामूलक के प्रति जागरूक हैं?

2. क्या विद्यालयी यह कार्यकर्ता समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?

अ. क्या विद्यालयी प्रधानाध्यापक समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?

ब. क्या विद्यालयी शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति के प्रति जागरूक हैं?

स. क्या विद्यालयी शिक्षिका समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?

द. क्या प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक / शिक्षिका समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक हैं?

घ. क्या अप्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक / शिक्षिका समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक है